

## भारत में अपस्फीति (India My Despair – Economy)

### मुद्रास्फीति और अपस्फीति में अंतर

#### मुद्रास्फीति

मुद्रास्फीति कीमतों में वृद्धि का एक पैमाना है। यदि अगस्त 2014 में आलू की कीमत 100 रुपये प्रति किग्रा है, और यदि अगस्त 2015 में कीमत 110 रुपये हो जाती है तो आलू की कीमत में मुद्रास्फीति 10 प्रतिशत थी। जब ऐसा अपेक्षाकृत दीर्घ समयावधि के लिए सभी वस्तुओं के मूल्यों में होता है तो हम कह सकते हैं की अर्थव्यवस्था मुद्रास्फीति का अनुभव कर रही है।

#### अपस्फीति

अपस्फीति मुद्रास्फीति की विपरीत स्थिति है। अर्थात् कीमतें एक अवधि से दूसरी तक गिरती जाती हैं। इस प्रकार अपस्फीति वस्तुओं तथा सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में एक गिरावट है। जब मुद्रास्फीति की दर 0 प्रतिशत से नीचे गिर जाती हो (एक ऋणात्मक मुद्रास्फीति दर) अपस्फीति होती है।

#### सकारात्मक प्रभाव

- अपस्फीति को एक अस्थायी अवस्था के रूप में माना जा सकता है जो बजट को संतुलित तथा प्रतिस्पर्धा में सुधार करेगी।
- मध्यम श्रेणी की अपस्फीति बचतकर्ताओं तथा निवेशकों के लिए लाभदायक हो सकती है क्योंकि उनकी परिसंपत्तियों का मूल्य अपस्फीति की दर के सापेक्ष बढ़ती है।
- सामान्यतः जब श्रम बल में शिथिलता होती है तब मजदूरी दर निम्न रखने का दबाव होता है, जोकि व्यापार के लिये अच्छा समझा जाता है। व्यापारी मजदूरों को कम भुगतान करके ज्यादा मुनाफ़ा कमा सकते है।

#### नकारात्मक प्रभाव

- अपस्फीति ऋणाधारकों के लिए हानिकारक हो सकती है चूंकि वे उस मुद्रा में ऋण चुकाते हैं जो कि अपस्फीति के कारण ज्यादा महँगी हो गयी है।
- चूंकि श्रमिक भी उपभोक्ता हैं। यदि मजदूरी एक समान है तो वृद्धि भी एक समान ही होगी।
- सामान्यतः एक समान मजदूरी वो है जो खपत में वृद्धि को रोकती है और इस प्रकार इसका अपस्फीति प्रभाव हो सकता है।
- कम मुद्रास्फीति या अपस्फीति इस प्रकार से उच्च बेराजगारी के साथ सहसंबद्ध है।